P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-8* (Part-2) April- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

भारतीय अर्थव्यवस्था में उद्यमिता का योगदान

नीरज कुमार
सहायक प्राध्यापक,
वाणिज्य विभाग,
स्वामी एजूकेशनल कॉम्प्लेक्स
महाविद्यालय पूरनपुर,
पीलीभीत, उ0प्र0, भारत

सारांश

उद्यमिता का अर्थ लघु व्यवसाय की शुरूआत करने से है। भारत में दूरदर्शी व्यक्तियों की कमी नहीं है, जो अपनी पूंजी लगाकर स्वयं जोखिम वहन करना पसंद करते हैं। भारत में लोगों की मान्यता है कि प्रथम स्थान पर कृषि, दूसरे स्थान पर व्यवसाय और तीसरे स्थान पर नौकरी को रखा गया है। भारत में लोग अपना व्यवसाय करना अधिक पंसद करते हैं। अपना व्यवसाय करने से स्वयं आत्मनिर्भर बनते हैं।

मुख्य शब्द : उद्यमिता, भारतीय अर्थव्यवस्था, स्टार्टअप इंडिया, प्रधानमंत्री मुद्रा योजना, लघु उद्यमी योजना।

प्रस्तावना

उद्यमिता से उद्यमी को एक अलग पहचान मिलती है और वह अपना जीवन स्तर ऊँचा करने में सक्षम होते हैं। भारतीय अर्थव्यवस्था में प्राकतिक संसाधनों की कमी नहीं है लेकिन उनका पूर्णरूप से सदुपयोग नहीं हो पाता। भारत में आर्थिक विकास की गति धीमी होने का कारण लघु उद्योगों का विकास न हो पाना है। सरकार द्वारा इस विषय में बहुत कुछ किया गया है। उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए अनेक बैंकों की स्थापना की गई है। सरकार ने लघु उद्योग स्थापित करने के लिए बहुत सी छूट प्रदान की है। इस संबंध में 1991 से उदारीकरण की नीति को अपनाया गया है। वर्तमान सरकार ने भी बहुत से कार्यक्रम चलाए हैं। जैसे स्टार्टअप इंडिया, प्रधानमंत्री मुद्रा योजना, लघु उद्यमी योजना इन सब कार्यक्रमों में पूंजी उपलब्ध कराने के लिए बैंकों को स्वायत्तता प्रदान की गई है। जिससे उद्यमी को उद्यम स्थापित करने में समय नहीं लगता। उद्यमी अपने सपनों को साकार कर सकता है।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत शोधपत्र का उद्देश्य भारतीय अर्थव्यवस्था में उद्यमिता के योगदान का अध्ययन करना है।

उद्यमिता की विशेषताएं

उद्यमिता में पहल करने की क्षमता

उद्यमिता के लिए यह आवश्यक है कि उसमें उद्यमिता की पहल करने की क्षमता हो। उद्यमी को सही समय पर पहल करनी चाहिए, यदि एक बार अवसर निकल जाता है तो फिर वह अवसर लौटकर नहीं आता। अतः पहल करने की क्षमता का होना अति आवश्यक है।

उद्यमिता का ज्ञान

उद्यमी को यह भी ज्ञान होना चाहिए जो उद्यम हम स्थापित कर रहे हैं उसके लिए कच्चा माल कहाँ से प्राप्त हो, उद्यम के लिए श्रमिक कहाँ से प्राप्त होंगे। तैयार माल के लिए बाजार कहाँ उपलब्ध होगा। अतः उद्यमिता का पूर्ण ज्ञान होना आवश्यक है।

उद्यमिता में जोखिम उठाने की क्षमता का होना

जो व्यक्ति उद्यम स्थापित कर रहा है यदि उद्यम में कोई हानि हो जाती है तो उसको वहन करने को क्षमता होनी चाहिए। हानि से उद्यमी को कभी घबराना नहीं चाहिए।

उद्यमिता में आशावादी दृष्टिकोण का होना

उद्यमिता के अन्तर्गत आशावादी दृष्टिकोण का होना अति आवश्यक है। यदि वह भविष्य में क्या होगा इसका पूर्वानुमान लगा ले तो उद्यमिता में कभी हानि नहीं उठानी पड़ सकती है।

उद्यमिता को परिस्थितियों के अनुसार ढालना

उद्यमिता की यह विशेषता होनी चाहिए कि वह समय के अनुसार बदल सके आज के युग में बहुत से नवीन परिवर्तन होते रहते हैं। उन परिवर्तन के अनुसार उद्यमिता को ढलना चाहिए। अतः परिस्थितियों के अनुसार उद्यमिता को ढलता जाना चाहिए।

आत्मबल का होना

जो व्यक्ति उद्यम स्थापित करना चाहता है। उसमें आत्मबल का होना अति आवश्यक है। सफलता प्राप्त करने के लिए आत्मबल का होना अति आवश्यक है।

नेतृत्व करने की क्षमता

जो व्यक्ति उद्यम स्थापित करना चाहता है उसमें नेतृत्व की क्षमता होनी चाहिए। उद्यमिता में कदम कदम पर नेतृत्व की आवश्यकता होती है। उद्यमिता के अन्तर्गत सभी का मार्गदर्शन करना होता है।

उद्यमिता के अन्तर्गत कठिन परिश्रम करने वाला

आज के युग में वही व्यक्ति सफल उद्यमी हो सकता है जो अपने उद्यम के लिए कठिन परिश्रम कर सके। कहते हैं परिश्रम सफलता की कुंजी है। अतः कठिन परिश्रम करने वाला व्यक्ति ही उद्यमिता में सफल हो सकता है।

उद्यमिता के उद्देश्य

1. उपर्युक्त उत्पादों का चयन सुसाध्य परियोजनाओं को तैयार करना।
2. रोजगार के अवसरों में वृद्धि।
3. व्यवसाय के बारे में उद्यमी के दृष्टिकोण को व्यापक बनाना एवं कानून की सीमाओं के भीतर उसके विकास में सहायता करना।
4. देश के प्रत्येक राज्य एवं क्षेत्र का विकास करने हेतु।
5. उद्यमिता की गुणवत्ता को विकसित सुदृढ़ करना।
6. व्यक्तियों को छोटे व्यवसायों की स्थापना एवं परिचालन में निहित प्रक्रिया एवं कार्यवाही से परिचित करना।

उद्यमिता का महत्व

देश का समुचित विकास करने के लिए लघु उद्योगों की स्थापना करना अत्यंत आवश्यक है। यदि देश में छोटे–छोटे उद्योग स्थापित किए जाएं तो लोगों को स्थानीय स्तर पर रोजगार उपलब्ध हो जाता है और लोगों को रोजगार के लिए बाहर नहीं जाना पड़ता। लघु उद्योगों द्वारा जो वस्तुएं तैयार की जाती हैं वह देश से बाहर निर्यात की जाती हैं। जिससे देश की विदेशी पूँजी पर्याप्त मात्रा में प्राप्त होती है। इसके अतिरिक्त देश को पहचान भी प्राप्त होती है जिससे देश को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त होती है।

उद्यमिता के प्रकार

उद्यमी कई प्रकार के होते हैं। जैसे तकनीकी उद्यमी, व्यापारी उद्यमी, सेवा उद्यमी, शहरी उद्यमी, ग्रामीण उद्यमी, पुरूष उद्यमी, महिला उद्यमी आदि।

उभरती अर्थव्यवस्था में उद्यमिता पर वैश्वीकरण के प्रभाव

वर्तमान भारतीय अर्थव्यवस्था में उद्यमिता पर वैश्वीकरण का प्रभाव पड़ा है। हमारे देश में दूसरे देशों के व्यक्ति भी पूंजी लगा रहे हैं। जिससे हमारे देश में उद्योग तेजी से बढ़ रहे हैं और जो विनियोगकर्ता इन उद्योगों में विनियोग कर रहे हैं, उसके बदले में भी उन्हें ब्याज के रूप में धन प्राप्त हो रहा है। अतः उभरती हुई अर्थव्यवस्था में भारत देश में उद्यमिता का उज्ज्वल भविष्य है।

उभरती हुई अर्थव्यवस्था में उद्यमशीलता के अवसर

उभरती हुई अर्थव्यवस्था में उद्यमशीलता के पूर्ण अवसर विद्यमान हैं। आज हमारे देश में अनेकों लघु इकाईयां विकसित हो रही है। उद्यम स्थापित करने के लिए उद्यमी को पर्याप्त मात्रा में पूंजी उपलब्ध हो रही है और पर्याप्त मात्रा में कच्चा माल उपलब्ध है और श्रमिकों की भारत देश में कमी नहीं है। अतः हम कह सकते हैं कि भारत देश में उद्यमशीलता का सुनहरा भविष्य है।

देश के आर्थिक विकास में युवा उद्यमियों की भूमिका

युवा देश का भविष्य होते हैं। यदि उन्हें सही तरह से प्रशिक्षित किया जाए तो वह देश के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं। वर्तमान सरकार ने देश में युवाओं को अधिक से अधिक आर्थिक विकास से जोड़ने के लिए बहुत से कार्यक्रम चलाए हैं। जिससे देश के युवा प्रशिक्षण प्राप्त करके देश को सेवाएं दे रहे हैं। साथ ही युवाओं की भागीदारी से देश आगे बढ़ रहा है। अतः देश के विकास में युवाओं की महत्वपूर्ण भागीदारी है।

उद्यमिता विकास में नवीन आयाम

उद्यमिता विकास में नवीन खोज की जा रही है। कम पूंजी में नये उद्यम स्थापित किये जा रहे हैं जो उद्यम स्थापित हैं उनमें नवीन उपकरणों का प्रयोग करके कम लागत में वस्तुओं का उत्पादन किया जा रहा है। परम्परागत उद्यमिता से अलग हटके नए आयामों की खोज कर उद्यमों में लागू करना है तथा नए प्रकार के उद्यम स्थापित करना है।

उद्यमिता में महिलाओं की भूमिका

आज की महिलाएं घर में काम करने वाली नहीं रह गई हैं। आज की महिला घर से निकल कर काम करने वाली हो गई है। उद्यमिता में भी महिलाएं महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। आज की महिलाएं अपने घर में ही छोटे उद्यम स्थापित कर लेती हैं और अपना समूह बनाकर काम करने लगती हैं। जिससे वह स्वावलंबी बन रही हैं। आज उन्हें दूसरों पर निर्भर नहीं रहना पड़ता है। उद्यमिता में महिलाओं की भागीदारी होने से देश की आर्थिक प्रगति को बल मिला है।

उद्यमिता विकास में चुनौती और बाधाएं

किसी भी काम करने से पहले बहुत सी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। इसी तरह उद्यम की स्थापना करने से पहले उद्यमी को बहुत से पूर्व अनुमान लगाने पड़ते हैं। उद्यमी को यह देखना पड़ता है कि उद्यम को किस जगह लगाया जाए जहां पर उसे कच्चा माल श्रमिक और पूँजी आसानी से मिल सके। वह जिस स्थान पर उत्पादन करेगा वहां पर बाजार उपलब्ध है या नहीं। कुछ उद्योग ऐसे हैं जिसमें सरकार से अनुमति की आवश्यकता होती है। सरकार से अनुमति मिलने में बहुत समय लग जाता है, और उद्यम स्थापित करने में बहुत समय लग जाता है।

ग्रामीण उद्यमियों के लिए बाधाएं एवं उपचार

भारत में अधिकांश जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्र में निवास करती है। ग्रामीण जनसंख्या बहुत कम पढ़ी लिखी है। जिससे उन्हें उद्यम स्थापित करने में कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। ग्रामीण उद्यमी को यह ज्ञात नहीं

होता कि वह कहाँ से पूंजी प्राप्त करे, उद्यम स्थापित करने के लिए कहां से कच्चा माल प्राप्त करे, ग्रामीण उद्यामियों को अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है, और ग्रामीण युवा प्रशिक्षित भी नहीं होते हैं। इन सब कठिनाइयों को दूर करने के लिए देश की ग्रामीण जनता को अधिक से अधिक शिक्षित किया जाए और अधिक से अधिक प्रशिक्षित करना चाहिए। ग्रामीण युवाओं को बैंकिंग के बारे में अधिक से अधिक जानकारी होने चाहिए जिससे ग्रामीण उद्यमियों को पूंजी प्राप्त करने में कठिनाई का सामना न करना पड़े। वर्तमान में युवाओं को प्रशिक्षित करने में कौशल विकास मिशन महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

उद्यमशीलता के माध्यम से ग्रामीण आर्थिक विकास

यदि भारत में ग्रामीण जगहों पर उद्यम स्थापित किया जाए तो वहां के स्थानीय सुवाओं को रोजगार प्राप्त होगा ग्रामीण युवा अपना गांव छोड़कर रोजगार की तलाश में गांव से बाहर नहीं जाएंगे और ग्रामीण अर्थव्यवस्था प्रगतिशील होगी। ग्रामीण युवा अपना स्वयं का रोजगार प्राप्त करेंगे तथा स्वावलंबी बनेंगे और दूसरे व्यक्तियों को भी रोजगार उपलब्ध कराएंगे अतः ग्रामीण उद्यमिता आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

ग्रामीण परियोजनाएं जो देश के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं

ग्रामीण क्षेत्र में आज पशुपालन उद्योग, मुर्गी पालन उद्योग, मछली पालन उद्योग चल रहे हैं। ग्रामीण क्षेत्र में डेयरी उद्योग लग जाने से हमारे देश में दूध की कमी दूर हुई है। इस तरह मुर्गी पालन और मछली पालन उद्योग से ग्रामीणों को रोजगार प्राप्त हुआ है।

निष्कर्ष

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि उद्यमिता आज के युवा वर्ग की एक आवश्यकता बन गई है। यदि हम अधिक से अधिक उद्यम स्थापित करते हैं, तो स्थानीय लोगों को रोजगार उपलब्ध हेाता है। यह देश के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। हमारे देश में उद्यमिता का भविष्य उज्ज्वल है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

www.scotbuzz.org/2017/07/udyamita.html
https://smallb.sidbi.in/node/2712 efgyk m|ferkA smaalB
उद्यमिता – विकिपीडिया, https:// hi.m.wikipedia.org
उद्यमिता विकास एवं इसका महत्व (krishnadubey41on.sun,14/04/2013), www.rescarchgate.net>publicatio
www.ncert.nic.in>ncerts>hbs213
भारत में उद्यमिता विकास (डा0 विजय दुबे, डा0 ममता दुबे)
https://scholar.google.co.in